Multilingual and Multidisciplinary Research Review

A Peer-Reviewed, Refereed International Journal
Available online at: https://www.mamrr.com/

OPEN ACCESS

ISSN: xxxx-xxxx DOI - xxxxxxxxxxxxxxxxxx

लिंग, भाषा और मीडिया: डिजिटल पत्रकारिता में प्रतिनिधित्व का एक अध्ययन

Dr. Anjali Sharma
Assistant Professor
University of Delhi

ABSTRACT

जेंडर, भाषा और डिजिटल पत्रकारिता का मिलन समकालीन मीडिया स्टडीज़ में सबसे गतिशील जगहों में से एक है। डिजिटल कम्युनिकेशन के विकास ने पारंपरिक न्यूज़ स्ट्रक्चर को बदल दिया है, लंबे समय से चली आ रही जेंडर हायरार्की और भाषाई रूढ़ियों को चुनौती दी है, और साथ ही उनमें से कई को एल्गोरिथमिक और विज़ुअल रूपों में फिर से बनाया है। यह रिसर्च जांच करती है कि पूरे भारत और अन्य दक्षिण एशियाई संदर्भों में डिजिटल पत्रकारिता की भाषाई और विज़ुअल प्रथाओं के माध्यम से जेंडर को कैसे दिखाया जाता है, उस पर बातचीत की जाती है और उसे फिर से बनाया जाता है। यह न्यूज़ रूम के डिजिटल बदलाव के भीतर जेंडर वाले डिस्कोर्स को रखता है, यह पता लगाता है कि प्रिंट से ऑनलाइन मीडिया में जाने से पावर रिलेशन, न्यूज़ रूम कल्चर और पत्रकारिता की आवाज़ को कैसे फिर से परिभाषित किया गया है। यह स्टडी तीन आपस में जुड़े आयामों पर केंद्रित है: डिजिटल पत्रकारिता में भाषा का जेंडर वाला उपयोग, न्यूज़ कंटेंट में महिलाओं और जेंडर अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व, और मीडिया में जेंडर समानता के लिए एल्गोरिथमिक एम्प्लीफिकेशन और दर्शकों की बातचीत के व्यापक प्रभाव।

नारीवादी मीडिया सिद्धांत, महत्वपूर्ण डिस्कोर्स विश्लेषण और समाजभाषाविज्ञान का उपयोग करते हुए, यह स्टडी एक मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करती है जो 1200 डिजिटल समाचार कहानियों के कंटेंट विश्लेषण, 40 पत्रकारों (जेंडर के अनुसार समान रूप से विभाजित) के साथ नृवंशविज्ञान साक्षात्कार, और ऑनलाइन टिप्पणियों और सोशल-मीडिया थ्रेड्स की डिस्कोर्स मैपिंग को जोड़ती है। इसमें द वायर, स्क्रॉल, बीबीसी हिंदी और एनडीटीवी डिजिटल जैसे प्रमुख डिजिटल-समाचार संगठनों में संपादकीय दिशानिर्देशों, प्लेटफॉर्म शासन और जेंडर कोड की नीति समीक्षा भी शामिल है। विश्लेषण से पता चलता है कि जबकि डिजिटल पत्रकारिता ने हाशिए पर पड़ी आवाजों के लिए जगहें खोली हैं और अभिव्यक्ति का लोकतंत्रीकरण किया है, संरचनात्मक जेंडर असमानताएं सूक्ष्म भाषाई पूर्वाग्रह, विज़ुअल फ्रेमिंग और एल्गोरिथमिक अदृश्यता के माध्यम से बनी हुई हैं। महिला पत्रकार और LGBTQ+ पेशेवर अक्सर उत्पीड़न, नेतृत्व में कम प्रतिनिधित्व और दर्शकों की सहभागिता में जेंडर वाली अपेक्षाओं से चिह्नित अनिश्चित जगहों पर काम करते हैं।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

यह पेपर तर्क देता है कि डिजिटल मीडिया में समानता हासिल करने के लिए समावेशी भाषा के तरीके और जेंडर-सेंसटिव एडिटोरियल फ्रेमवर्क ज़रूरी हैं। रिसर्च के नतीजों से यह भी पता चलता है कि डिजिटल जर्नलिज़्म में जेंडर और भाषा मामूली मुद्दे नहीं हैं, बल्कि यह समझने के लिए ज़रूरी है कि ऑनलाइन कम्युनिकेशन में पावर कैसे काम करती है। आखिर में, यह स्टडी फेमिनिस्ट नैतिकता, भागीदारी वाले कम्युनिकेशन और डिजिटल जवाबदेही पर आधारित एक बदलाव लाने वाले जर्नलिस्टिक मॉडल की वकालत करती है, जिसमें एक ऐसे मीडिया माहौल की कल्पना की गई है जहाँ प्रतिनिधित्व समान और सशक्त बनाने वाला दोनों हो।

परिचय

डिजिटल पत्रकारिता ने वैश्विक सूचना परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया है, पारंपरिक समाचार पदानुक्रम को बाधित किया है और भागीदारी और दृश्यता के लिए नए रास्ते बनाए हैं। फिर भी, इस तकनीकी परिवर्तन के बीच, एक स्थायी प्रश्न बना हुआ है: किसकी आवाज़ सुनी जाती है, और किसकी कहानियों को चुप करा दिया जाता है? मीडिया में लिंग और भाषा का मेल हमेशा शक्ति की बातचीत का एक स्थल रहा है, और डिजिटल युग में, ये बातचीत और भी तेज़ हो गई हैं। भाषा न केवल संचार के एक उपकरण के रूप में कार्य करती है, बल्कि समावेशन और बहिष्कार के एक तंत्र के रूप में भी काम करती है, यह परिभाषित करती है कि लिंग पहचान को कैसे चित्रित किया जाता है, चुनौती दी जाती है, और उपभोग किया जाता है। डिजिटल पत्रकारिता में, भाषाई और दृश्य अभ्यास - सुर्खियाँ, कैप्शन, लहजा, इमेजरी, और इंटरैक्टिविटी - प्रतिनिधित्व की वास्तुकला का निर्माण करते हैं जो लिंग के बारे में सार्वजनिक धारणा को आकार देता है।

पत्रकारिता में डिजिटल बदलाव ने लोकतंत्रीकरण का वादा किया: कुलीन संपादकीय बाधाओं को तोड़ना, नागरिक पत्रकारिता का उदय, और कम प्रतिनिधित्व वाली आवाज़ों को बढ़ाना। ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ऑनलाइन पोर्टल जैसे प्लेटफार्मों ने अभूतपूर्व तरीकों से भागीदारी का विस्तार किया है। हालाँकि, यह लोकतंत्रीकरण असमान है। वही तकनीकें जो सशक्त बनाती हैं, उन्होंने एल्गोरिथम पूर्वाग्रहों, लिंग आधारित ट्रोलिंग और भावनाओं के व्यावसायीकरण के माध्यम से ऐतिहासिक असमानताओं को भी पुन: उत्पन्न किया है। भारत और पूरे दक्षिण एशिया में, डिजिटल पत्रकारिता पितृसत्तात्मक सामाजिक प्रणालियों के भीतर काम करती है जहाँ लिंग और भाषा जाति, वर्ग और धर्म के साथ मिलते हैं। न्यूज़ रूम की संस्कृति अभी भी पुरुष आवाज़ों को प्राथमिकता देती है, जबकि भाषाई कोड अक्सर विषमलैंगिक और पुरुष-केंद्रित मानदंडों को सुदृढ़ करते हैं। पत्रकारिता की "तटस्थ" आवाज़, जिसे वस्तुनिष्ठ के रूप में सराहा जाता है, अक्सर मर्दाना भाषाई शैलियों - मुखर, अलग और आधिकारिक - के प्रभुत्व को छिपाती है, जिससे वैकल्पिक, सहानुभूतिपूर्ण, या समुदाय-उन्मुख आवाज़ों को हाशिए पर धकेल दिया जाता है जो अक्सर स्त्री या गैर-बाइनरी अभिव्यक्ति से जुड़ी होती हैं।

लिंग, भाषा और मीडिया का एक साथ अध्ययन करने का महत्व इस मान्यता से उत्पन्न होता है कि मीडिया प्रतिनिधित्व केवल वास्तविकता को प्रतिबिंबित नहीं करता है; यह उसका निर्माण करता है। डिजिटल पत्रकारिता ने तात्कालिकता, इंटरैक्टिविटी और एल्गोरिथम प्रसार के माध्यम से इस रचनात्मक कार्य को तेज किया है। सुर्खियों की भाषा, कहानियों की रूपरेखा, और दृश्यों का चुनाव सभी लिंग भूमिकाओं के बारे में सार्वजनिक कल्पना को आकार देते हैं। यहाँ तक कि प्लेटफार्मों की वास्तुकला - वर्ण सीमाएँ, ट्रेंडिंग एल्गोरिदम, टिप्पणी मॉडरेशन - भी प्रभावित करती है कि लिंग आधारित विषयों पर कैसे चर्चा की जाती है और उन्हें कैसे समझा जाता है। नतीजतन, डिजिटल पत्रकारिता सशक्तिकरण और नए सिरे से पितृसत्तात्मक नियंत्रण दोनों का एक स्थल है।

दक्षिण एशिया में, डिजिटल मीडिया में लिंग प्रतिनिधित्व सामाजिक-सांस्कृतिक पदानुक्रमों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में महिला पत्रकार

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

अक्सर ऑनलाइन दुर्व्यवहार और असहमति को चुप कराने के लिए डिज़ाइन किए गए लिंग-आधारित गलत सूचना अभियानों का सामना करना पड़ता है। कमेंट सेक्शन में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा और सोशल-मीडिया पर इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रों में महिला-द्वेष की निरंतरता को दिखाता है। साथ ही, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने #MeTooIndia, #PinjraTod, और #AuratMarch जैसे नारीवादी अभियानों के माध्यम से अभूतपूर्व एकजुटता को संभव बनाया है, जिनमें से सभी ने संस्थागत लिंगभेद को चुनौती देने के लिए पत्रकारिता के क्षेत्रों का इस्तेमाल किया। इस प्रकार सशक्तिकरण और उत्पीड़न का परस्पर क्रिया डिजिटल पत्रकारिता के लिंग-आधारित परिदृश्य को परिभाषित करता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल न्यूज़ रूम में भाषाई पैटर्न और संपादकीय प्रथाओं का विश्लेषण करके इस परिदृश्य की जांच करना है। यह जांच करता है कि पत्रकार लिंग के आधार पर अधिकार, सहानुभूति और विश्वसनीयता बनाने के लिए भाषा का उपयोग कैसे करते हैं और मीडिया संगठन दृश्य और कथात्मक संदर्भों में लिंग-आधारित प्रतिनिधित्व का प्रबंधन कैसे करते हैं। यह शोध समावेशी भाषा और नारीवादी डिजिटल नैतिकता की परिवर्तनकारी क्षमता का भी पता लगाता है जो न्यायसंगत पत्रकारिता को आकार देने में मदद करती है।

साहित्य समीक्षा

लिंग, भाषा और मीडिया पर विद्वानों की जांच कई सैद्धांतिक परंपराओं के माध्यम से विकसित हुई है। टुचमैन (1978) और वैन ज़ूनन (1994) जैसे विद्वानों द्वारा शुरुआती नारीवादी मीडिया अध्ययनों ने "प्रतीकात्मक विनाश" की अवधारणा पेश की, यह तर्क देते हुए कि मुख्यधारा मीडिया में महिलाएं या तो अनुपस्थित थीं, तुच्छ थीं, या रूढ़िवादिता का शिकार थीं। गिल (2007), लाज़र (2014), और मचिन और मेयर (2012) के बाद के कार्यों ने इस आलोचना को प्रवचन विश्लेषण तक बढ़ाया, यह खुलासा करते हुए कि भाषाई विकल्प रूपक, तौर-तरीके और कथात्मक फ्रेमिंग के माध्यम से लिंग पदानुक्रम को कैसे पुन: उत्पन्न करते हैं। इन अध्ययनों ने सामूहिक रूप से यह स्थापित किया कि भाषा कभी भी तटस्थ नहीं होती; यह शक्ति के सामाजिक संबंधों को एन्कोड करती है, विशेष रूप से लिंग पर आधारित।

डिजिटल पत्रकारिता के उद्भव ने इन ढांचों की फिर से जांच करने के लिए प्रेरित किया है। बैनेट-वेइज़र (2018) और गिल (2020) ध्यान देते हैं कि डिजिटल संस्कृति ने एक "आत्मविश्वास अर्थव्यवस्था" का निर्माण किया है जिसमें मीडिया प्रतिनिधित्व के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का व्यवसायीकरण किया जाता है। साथ ही, ऑनलाइन स्थानों की इंटरैक्टिविटी हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़ों को कथाओं का विरोध करने और उन्हें फिर से परिभाषित करने की अनुमति देती है। केलर (2021) और डी'इग्नाज़ियो और क्लेन (2020) जैसे विद्वान इस बात पर ज़ोर देते हैं कि एल्गोरिथम संरचनाएं - अनुशंसा प्रणाली, सर्च इंजन, जुड़ाव मेट्रिक्स - लिंग-आधारित मध्यस्थता के नए स्थल बन गए हैं। इसलिए, नारीवादी डिजिटल ज्ञानमीमांसा को मानव प्रवचन और मशीन प्रवचन दोनों का विश्लेषण करना चाहिए। दक्षिण एशियाई संदर्भों में, ठाकुर (2019), मुखर्जी (2021), और चंद्र (2023) के शोध से न्यूज़ प्रोडक्शन में लगातार लैंगिक असमानता सामने आई है। महिला पत्रकार अभी भी
लीडरशिप और इन्वेस्टिगेटिव रोल में कम रिप्रेजेंटेशन है, जबकि जेंडर इश्यूज़ को लिंग और विज़ुअल तरीके से दिखाने का तरीका पेट्रियार्कल ट्रॉप्स पर निर्भर है। इंडियन डिजिटल आउटलेट्स (द क्विंट, स्क्रॉल, द वायर) की स्टडीज़ से पता चलता है कि प्रोग्रेसिव जर्नलिज़्म में भी जेंडर वाली भाषा बनी हुई है, जो अक्सर छोटी-मोटी गड़बड़ियों से दिखती है—जैसे महिलाओं के लिए पहला नाम और पुरुषों के लिए सरनेम का इस्तेमाल करना, एक्सपर्टीज़ से ज़्यादा दिखावे पर ज़ोर देना, या जेंडर पर आधारित हिंसा को सनसनीखेज बनाना।

सोशियोलिंग्विस्टिक रिसर्च इन नतीजों को पूरा करती है। कैमरन (2020) और सुंदरलैंड

(2021) एनालाइज़ करते हैं कि जेंडर से जुड़ी बातचीत के स्टाइल कैसे दिखते हैं

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

कमेंट सेक्शन, ट्वीट्स और शेयर ऐसे परफ़ॉर्मेटिव स्पेस बन जाते हैं जहाँ यूज़र्स जेंडर नॉर्म्स को दोहराते हैं या उनका विरोध करते हैं। कौर (2022) द्वारा साउथ एशियन रिसर्च से पता चलता है कि महिला पत्रकारों के खिलाफ ऑनलाइन दुर्व्यवहार एक तरह की डिजिटल डिसिप्लिनिंग के रूप में काम करता है जो पितृसत्तात्मक चुप्पी को लागू करता है। फिर भी, फेमिनिज़्म इन इंडिया जैसे काउंटर-पब्लिक दिखाते हैं कि फेमिनिस्ट डिजिटल जर्नलिज़्म जानबूझकर स्टाइल के साथ एक्सपेरिमेंट करके भाषाई एजेंसी को वापस पा सकता है - जिसमें समावेशी सर्वनामों का उपयोग करना, पुरुष दृष्टिकोण को कम महत्व देना, और व्यक्तिगत के बजाय सामूहिक आवाज़ अपनाना शामिल है।

इन प्रगतियों के बावजूद, महत्वपूर्ण रिसर्च गैप बने हुए हैं। कुछ तुलनात्मक अध्ययनों ने कई डिजिटल प्लेटफॉर्म या हिंदी, उर्दू, बंगाली और अंग्रेजी जैसी भाषाओं में भाषाई प्रतिनिधित्व का विश्लेषण किया है। इसके अलावा, जबकि जेंडर स्टडीज़ अक्सर प्रतिनिधित्व की आलोचना करते हैं, बहुत कम लोगों ने न्यूज़ रूम भाषा विज्ञान का पता लगाया है - रोज़मर्रा के भाषण कार्य जिनके माध्यम से पत्रकार लिंग आधारित अधिकार का निर्माण करते हैं। यह अध्ययन टेक्स्टुअल और एथनोग्राफिक विश्लेषण को मिलाकर इन कमियों को दूर करता है ताकि यह पता चल सके कि डिजिटल पत्रकारिता में भाषा लिंग गतिशीलता को कैसे दर्शाती है और आकार देती है।

रिसर्च के उद्देश्य

इस रिसर्च का मुख्य उद्देश्य यह जांच करना है कि डिजिटल पत्रकारिता में लिंग और भाषा कैसे एक-दूसरे से मिलकर प्रतिनिधित्व, भागीदारी और शक्ति को आकार देते हैं। विशिष्ट लक्ष्यों में शामिल हैं:

1. दक्षिण एशियाई प्लेटफॉर्म पर डिजिटल न्यूज़ कंटेंट में जेंडर पहचान को दिखाने वाले भाषाई पैटर्न, नैरेटिव स्ट्रक्चर और विजुअल कोड का एनालिसिस करना।
2. भाषा, अधिकार और विश्वसनीयता की जेंडर वाली हायरार्की को मज़बूत करने या चुनौती देने में डिजिटल न्यूज़ रूम कल्चर की भूमिका की जांच करना।
3. यह पता लगाना कि एल्गोरिदम, सोशल-मीडिया इंटरैक्शन और कमेंट मॉडरेशन ऑनलाइन जेंडर वाले डिस्कोर्स को कैसे प्रभावित करते हैं।
4. डिजिटल मीडिया संगठनों के अंदर भाषाई और प्रोफेशनल पहचान बनाने में महिलाओं और जेंडर-डाइवर्स पत्रकारों के अनुभवों का आकलन करना।
5. फेमिनिस्ट नैतिकता और डिजिटल जवाबदेही पर आधारित जेंडर-समावेशी और भाषाई रूप से समान पत्रकारिता के लिए एक फ्रेमवर्क प्रस्तावित करना।

इन उद्देश्यों को पूरा करके, यह स्टडी डिजिटल पत्रकारिता में जेंडर प्रतिनिधित्व की थ्योरेटिकल समझ और प्रैक्टिकल सुधार में योगदान देती है, और मीडिया कम्युनिकेशन में समानता पर ग्लोबल चर्चाओं को आगे बढ़ाती है।

रिसर्च मेथोडोलॉजी

यह स्टडी एक मिक्स्ड-मेथड रिसर्च डिज़ाइन अपनाती है जिसमें क्वांटिटेटिव कंटेंट एनालिसिस, क्वालिटेटिव डिस्कोर्स एनालिसिस और एथनोग्राफिक इंटरव्यू शामिल हैं। तरीकों का ट्रायंगुलेशन जेंडर आधारित भाषाई प्रतिनिधित्व की खोज में व्यापकता और गहराई दोनों सुनिश्चित करता है।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

सैंपलिंग और स्कोप:

भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान के बड़े डिजिटल न्यूज़ आउटलेट्स—द वायर, NDTV डिजिटल, BBC हिंदी, द डेली स्टार और डॉन डिजिटल से डेटा इकट्ठा किया गया। 1,200 न्यूज़ स्टोरीज़ (2019–2024) का एक कॉर्पस बनाया गया, जिसमें पॉलिटिक्स, इकॉनमी, जेंडर इश्यूज़ और लाइफस्टाइल को दिखाया गया था। पुरुष और महिला लेखकों के लेखों का बराबर रिप्रेजेंटेशन पक्का करने के लिए, अलग-अलग लेवल पर रैंडम सैंपलिंग के ज़रिए आर्टिकल चुने गए।

क्वांटिटेटिव एनालिसिस:

हर आर्टिकल को लिंग्विस्टिक मार्कर जैसे प्रोनाउन का इस्तेमाल, एजेंसी एट्रिब्यूशन, कोटेशन पैटर्न और डिस्क्रिप्टिव एडजेक्टिव के लिए कोड किया गया था। लेखक और टॉपिक के बीच बायस और वेरिएशन के पैटर्न की पहचान करने के लिए SPSS का इस्तेमाल करके जेंडर रेफरेंस की फ्रीक्वेंसी और कॉन्टेक्स्ट का स्टैटिस्टिकली एनालिसिस किया गया। विज़ुअल डेटा—थंबनेल, कैप्शन और हेडलाइन—की जेंडर फ्रेमिंग के लिए जांच की गई।

क्वालिटेटिव एनालिसिस:

फेयरक्लो (2015) के बाद क्रिटिकल डिस्कोर्स एनालिसिस (CDA) का इस्तेमाल यह समझने के लिए किया गया कि लिंग्विस्टिक चॉइस सोशल पावर कैसे बनाती हैं। दस थीम—जिनमें अथॉरिटी, विक्टिमाइज़ेशन, एम्पावरमेंट, इमोशन और प्रोफेशनलिज़्म शामिल थे—की जांच की गई। 40 जर्नलिस्ट के साथ एथनोग्राफिक इंटरव्यू से एडिटोरियल डिसीजन-मेकिंग और वर्कप्लेस लैंग्वेज नॉर्म्स के बारे में कॉन्टेक्स्ट के हिसाब से जानकारी मिली। NVivo ने इंटरव्यू ट्रांसक्रिप्ट की थीमैटिक कोडिंग को आसान बनाया, जिसमें जेंडर कम्युनिकेशन, लीडरशिप डिस्कोर्स और ऑनलाइन हैरेसमेंट के अनुभवों पर फोकस किया गया।

एथिकल बातें: सभी पार्टिसिपेंट्स ने इन्फॉर्म्ड कंसेंट दी; एनोनिमिटी बनाए रखी गई। इंस्टीट्यूशनल रिव्यू बोर्ड से एथिकल क्लीयरेंस लिया गया। ऑनलाइन अब्यूज़ जैसे सेंसिटिव टॉपिक को कॉन्फिडेंशियलिटी और ट्रॉमा-अवेयर इंटरव्यूइंग के साथ हैंडल किया गया।

एनालिटिकल फ्रेमवर्क: यह स्टडी फेमिनिस्ट मीडिया थ्योरी, क्रिटिकल डिस्कोर्स एनालिसिस और डिजिटल सोशियोलॉजी को इंटीग्रेट करती है ताकि जेंडर लैंग्वेज को स्ट्रक्चर और एजेंसी दोनों के तौर पर जांचा जा सके। क्वांटिटेटिव और क्वालिटेटिव डेटा को सिंथेसाइज़ करके, यह बताता है कि रिप्रेजेंटेशन टेक्स्टुअल, इंस्टीट्यूशनल और टेक्नोलॉजिकल लेवल पर एक साथ कैसे काम करता है।

यह कॉम्प्रिहेंसिव मेथोडोलॉजी रिलायबिलिटी, वैलिडिटी और क्रिटिकल डेप्थ पक्का करती है, जिससे रिसर्च तेज़ी से डेवलप हो रहे डिजिटल-जर्नलिज़्म इकोसिस्टम में जेंडर, लैंग्वेज और मीडिया के इंटरसेक्शन को सामने ला पाती है। डेटा एनालिसिस और इंटरप्रिटेशन

इस स्टडी का एनालिटिकल फ्रेमवर्क यह पता लगाता है कि जेंडर, भाषा और डिजिटल जर्नलिज़्म कैसे एक-दूसरे से जुड़कर साउथ एशिया के डिजिटल मीडिया इकोसिस्टम में रिप्रेजेंटेशनल प्रैक्टिस, न्यूज़रूम डिस्कोर्स और ऑडियंस एंगेजमेंट को आकार देते हैं।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

मात्रात्मक सामग्री विश्लेषण और गुणात्मक साक्षात्कारों के माध्यम से, डेटा 2019 और 2024 के बीच पांच प्रमुख ऑनलाइन मीडिया संगठनों - द वायर, NDTV डिजिटल, BBC हिंदी, द डेली स्टार (बांग्लादेश), और डॉन डिजिटल (पाकिस्तान) द्वारा प्रकाशित 1200 डिजिटल समाचार कहानियों से संकलित किया गया था। 40 पत्रकारों के साथ पूरक नृवंशविज्ञान साक्षात्कार, लिंग के आधार पर समान रूप से विभाजित, ने संपादकीय निर्णयों, न्यूज़ रूम संस्कृति और ऑनलाइन बातचीत में भाषाई और लिंग-आधारित पैटर्न में प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि प्रदान की।

मात्रात्मक चरण ने पुरुष- और महिला-लिखित डिजिटल सामग्री के बीच व्यवस्थित भाषाई अंतर की पहचान की। 1200 लेखों में से, 48 प्रतिशत पुरुष पत्रकारों द्वारा, 39 प्रतिशत महिला पत्रकारों द्वारा, और 13 प्रतिशत अनाम या सामूहिक संपादकीय थे। भाषाई कोडिंग ने स्वर, शाब्दिक विकल्पों और विषयगत जोर में उल्लेखनीय भिन्नताएं प्रकट कीं। पुरुष पत्रकारों द्वारा लिखे गए लेखों में सांख्यिकीय रूप से उच्च आवृत्ति में निश्चयात्मक मोडल क्रियाओं (जरूर, चाहिए, होगा), अवैयक्तिक निर्माणों और संस्थागत संदर्भों का उपयोग किया गया था। इसके विपरीत, महिला-लिखित लेखों में समावेशी सर्वनामों (हम, हमारा), भावनात्मक विशेषणों और संवादिक संयोजकों का उपयोग किया गया था जो संबंधपरक जुड़ाव का संकेत देते हैं। सांख्यिकीय परीक्षणों ($p < 0.05$) ने इन भेदों की पुष्टि विषयगत श्रेणियों में की। लिंग-आधारित विचलन राजनीतिक और आर्थिक रिपोर्टिंग में सबसे अधिक दिखाई दिया, जबकि जीवन शैली और सामाजिक-न्याय अनुभागों में अधिक भाषाई अभिसरण प्रदर्शित हुआ।

शीर्षक भाषा के अर्थ संबंधी क्षेत्र विश्लेषण ने लिंग प्रतिनिधित्व के सुसंगत पैटर्न का खुलासा किया। पुरुष राजनीतिक हस्तियों के बारे में सुर्खियों में एजेंसी, शक्ति और नेतृत्व पर जोर दिया गया ("प्रधान मंत्री सुधारों की घोषणा करते हैं," "सीईओ नवाचार को बढ़ावा देते हैं"), जबकि महिला विषयों के बारे में सुर्खियों में असमान रूप से उपस्थिति, भावना या व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डाला गया ("अभिनेत्री संघर्ष के बारे में बात करती है," "मंत्री आंसू बहाते हुए टूट जाती है")। यह विषमता मनोरंजन और खेल कवरेज में सबसे अधिक स्पष्ट थी, जहां महिला-केंद्रित सुर्खियों में से 68 प्रतिशत में भावनात्मक या शारीरिक विवरण शामिल थे, जबकि पुरुष-केंद्रित सुर्खियों में केवल 21 प्रतिशत में ऐसा था। ये डेटा दर्शाते हैं कि स्पष्ट रूप से प्रगतिशील डिजिटल पत्रकारिता के भीतर भी, भाषाई प्रथाएं पारंपरिक लिंग फ्रेमिंग को दोहराती हैं जो पुरुष तर्कसंगतता और महिला भावुकता को प्राथमिकता देती है।

दृश्य सामग्री विश्लेषण ने इन प्रवृत्तियों की पुष्टि की। महिला हस्तियों की तस्वीरें नरम रोशनी, करीब कैमरा कोणों और गैर-तटस्थ पृष्ठभूमि के साथ खींची गईं, जो भेद्यता या अंतरंगता पर जोर देती हैं। पुरुष हस्तियों को चौड़े कोणों, तटस्थ रोशनी और व्यावसायिक सेटिंग्स के माध्यम से चित्रित किया गया था। यह पैटर्न राष्ट्रीय संदर्भों में बना रहा, हालांकि यह बांग्लादेशी आउटलेट्स में थोड़ा कम स्पष्ट था जिन्होंने आंतरिक लिंग-संवेदनशीलता दिशानिर्देशों को अपनाया था। इसलिए, समानता को बढ़ावा देने वाली औपचारिक नीतियों के बावजूद, डिजिटल पत्रकारिता की विज़ुअल सेमिओटिक्स गहराई से जेंडर-आधारित बनी हुई है।

विश्लेषण का व्याख्यात्मक घटक इन पैटर्न के पीछे के सांस्कृतिक तर्क को उजागर करके इस सांख्यिकीय तस्वीर को और गहरा करता है। महिला पत्रकारों के साथ इंटरव्यू में डिजिटल न्यूज़ रूम में विश्वसनीयता हासिल करने के लिए मर्दाना संचार शैलियों के अनुरूप ढलने के लगातार दबावों का वर्णन किया गया। कई लोगों ने बताया कि उन्हें "निष्पक्ष रहने" या "भावनात्मक शब्दों से बचने" की सलाह दी गई थी, जो पेशेवर लहजे के एक अप्रत्यक्ष जेंडर-आधारित होने को दर्शाता है। एक वरिष्ठ संवाददाता ने समझाया कि भाषाई तटस्थता "मर्दाना कोड" है, जिसका अर्थ है भावनात्मक अलगाव और संक्षिप्तता, जबकि नारीवादी या सहानुभूतिपूर्ण लेखन को वकालत के रूप में खारिज कर दिया जाता है। इसके विपरीत, पुरुष पत्रकारों ने स्वीकार किया कि भावनात्मक भाषा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अधिक जुड़ाव आकर्षित करती है, लेकिन हार्ड न्यूज़ रिपोर्टिंग में इसे अभी भी गलत माना जाता है। यह विरोधाभास बताता है कि जेंडर-आधारित भाषाई अपेक्षाएं न केवल संपादकीय मानदंडों में बल्कि उन एल्गोरिदम में भी अंतर्निहित हैं जो सूक्ष्मता के बजाय सनसनीखेजता को पुरस्कृत करते हैं।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

एल्गोरिदम की भूमिका एक मुख्य निष्कर्ष के रूप में सामने आई। कंटेंट मैनेजरों ने बताया कि हेडलाइन ऑप्टिमाइज़ेशन टूल और सोशल मीडिया पर ट्रेंडिंग एल्गोरिदम कुछ खास भाषाई रूपों को बढ़ावा देते हैं—छोटे, सनसनीखेज, भावनात्मक रूप से आवेशित—जो लैंगिक प्रतिनिधित्व को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। महिलाओं के बारे में कहानियों को एल्गोरिदम द्वारा तब ज़्यादा बढ़ावा मिलता है जब वे विवाद या पीड़ित होने पर ज़ोर देती हैं, जिससे लैंगिक दृश्यता के चक्र बने रहते हैं। मात्रात्मक मेट्रिक्स दिखाते हैं कि संघर्षपूर्ण या भावनात्मक शब्दों में बताई गई लैंगिक कहानियों को उन कहानियों की तुलना में 60 प्रतिशत ज़्यादा जुड़ाव मिलता है जो तटस्थ रूप से बताई जाती हैं। इस प्रकार, एल्गोरिदम डिज़ाइन पारंपरिक रूढ़ियों को बढ़ाता है, जबकि दर्शकों द्वारा संचालित निष्पक्षता का भ्रम पैदा करता है।

साक्षात्कार ट्रांसक्रिप्ट की विषयगत कोडिंग से पाँच बार-बार आने वाले विषय सामने आए: (1) लैंगिक टोन पुलिसिंग, (2) विश्वसनीयता का भाषाई प्रदर्शन, (3) रूढ़ियों का एल्गोरिदम द्वारा सुदृढ़ीकरण, (4) विमर्श नियंत्रण के रूप में ऑनलाइन उत्पीड़न, और (5) वैकल्पिक डिजिटल स्थानों के माध्यम से नारीवादी प्रतिरोध। महिला पत्रकारों ने अक्सर ऑनलाइन दुर्व्यवहार को पितृसत्तात्मक विमर्श के विस्तार के रूप में वर्णित किया: ट्रोलिंग टिप्पणियाँ पेशेवर सामग्री के बजाय आवाज, रूप और नैतिकता को लक्षित करती थीं। भाषाई रूप से, उत्पीड़न में अक्सर लैंगिक अपमान और कोडित भाषा का इस्तेमाल किया जाता था जो महिलाओं की अभिव्यक्ति पर रोक लगाती थी। पुरुष पत्रकारों को शायद ही कभी ऐसी ही जाँच का सामना करना पड़ा। हालाँकि, प्रति-कहानियाँ भी सामने आईं—फेमिनिज़्म इन इंडिया और बेहनबॉक्स जैसे नारीवादी डिजिटल आउटलेट जानबूझकर भाषाई कोड को फिर से इंजीनियर करते हैं, प्रमुख विमर्शों को चुनौती देने के लिए लिंग-समावेशी शब्दों और समुदाय-आधारित कहानी कहने का उपयोग करते हैं।

कहानी के विषयों और लेखक के लिंग के बीच सांख्यिकीय संबंध इंगित करता है कि महिला पत्रकार सामाजिक मुद्दों, लिंग अधिकारों और हाशिए पर पड़े समुदायों पर 44 प्रतिशत अधिक कवरेज करती हैं। पुरुष राजनीतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकी बीट्स पर हावी हैं, जहाँ संस्थागत भाषा और नीतिगत विमर्श प्रचलित हैं। ये विभाजन केवल व्यावसायिक नहीं बल्कि भाषाई भी हैं: महिला लेखक नीति को मानवीय अनुभव से जोड़ने वाले कथात्मक विमर्श का उपयोग करती हैं, जबकि पुरुष लेखक औपचारिक अलगाव बनाए रखते हैं। विश्लेषण इसे एक ज्ञानमीमांसीय विभाजन के रूप में व्याख्या करता है—अनुभवात्मक और संस्थागत पत्रकारिता के बीच—जो स्वयं भाषा की लैंगिक संरचना को दर्शाता है।

इस प्रकार मात्रात्मक और गुणात्मक साक्ष्य का एकीकरण यह दर्शाता है कि डिजिटल पत्रकारिता में लैंगिक प्रतिनिधित्व भाषा के माध्यम से कई स्तरों पर संचालित होता है—शब्दकोश, वाक्यविन्यास, दृश्य और एल्गोरिदम। डिजिटल मीडिया ने भागीदारी में विविधता लाई है, लेकिन पदानुक्रम को खत्म नहीं किया है। डेटा सशक्तिकरण और पुनरुत्पादन, प्रतिरोध और सुदृढ़ीकरण दोनों को प्रकट करता है, यह पुष्टि करता है कि लैंगिक भाषा एक प्राथमिक स्थान बनी हुई है जिसके माध्यम से ऑनलाइन पत्रकारिता में शक्ति प्रसारित होती है।

निष्कर्ष और चर्चा

इस अध्ययन के निष्कर्ष इस बात की व्यापक समझ को आगे बढ़ाते हैं कि डिजिटल पत्रकारिता, अपनी लोकतांत्रिक क्षमता के बावजूद, भाषा और प्रतिनिधित्व के लैंगिक पैटर्न द्वारा कैसे संरचित होती रहती है। पहली और सबसे अहम बात यह है कि डिजिटल जर्नलिज़्म के टेक्नोलॉजिकल आर्किटक्चर ने भाषाई भेदभाव को खत्म नहीं किया है; बल्कि इसे नए क्षेत्रों में पहुँचा दिया है। एल्गोरिदम, कंटेंट-मैनेजमेंट सिस्टम और ऑडियंस एनालिटिक्स अब ऐसे माध्यम के रूप में काम करते हैं जो यह तय करते हैं कि किस तरह के जेंडर वाले नैरेटिव दिखाई देंगे या नहीं। यह समझ मीडिया की फेमिनिस्ट आलोचना को एक नया रूप देती है: सिर्फ़ रिप्रेजेंटेशन पर ध्यान देने के बजाय, अब एल्गोरिदम के दखल की जाँच करनी होगी—वह अनदेखा हाथ जो यह तय करता है कि किसकी कहानियाँ सामने आएंगी, कौन से शब्द ट्रेंड करेंगे, और किसके इमोशन्स से पैसे कमाए जाएँगे।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.

दूसरी मुख्य बात यह है कि पत्रकारिता में भाषाई असमानता सिर्फ़ वर्णनात्मक नहीं, बल्कि प्रदर्शनकारी भी है। पत्रकारिता के आदर्श के तौर पर "निष्पक्षता" पर ज़ोर ऐतिहासिक रूप से मर्दाना-कोड वाली तर्कसंगतता के साथ जुड़ा हुआ है। डिजिटल न्यूज़रूम, गति और SEO ऑप्टिमाइज़ेशन की तलाश में, संक्षिप्त, आधिकारिक भाषा को प्राथमिकता देते हैं, जिससे लैंगिक प्रदर्शन की उम्मीदें मज़बूत होती हैं। महिला पत्रकार इन मानदंडों को अपनाती हैं, विश्वसनीयता हासिल करने के लिए तटस्थ या मुखर लहजा अपनाती हैं, जबकि पुरुष पत्रकार नीतिगत बीट्स पर हावी रहते हैं जहाँ ऐसे लहजे को महत्व दिया जाता है। यह प्रदर्शनकारीता स्पष्ट रूप से समान कार्यस्थलों में भी लैंगिक पदानुक्रम को बनाए रखती है।

तीसरी बात प्रतिनिधित्व से ही संबंधित है। कंटेंट विश्लेषण से पता चलता है कि डिजिटल समाचार सूक्ष्म भाषाई स्तरों पर पितृसत्तात्मक पदानुक्रम को दोहराता है। महिला विषयों को भाषाई रूप से व्यक्तिगत विशेषताओं, भावनात्मक स्थितियों, या संबंधपरक पहचान के माध्यम से फ्रेम किया जाता है, जबकि पुरुषों को एजेंसी और व्यावसायिकता से जोड़ा जाता है। यह विमर्श संबंधी असंतुलन प्रतीकात्मक बहिष्कार को बनाए रखता है, भले ही मीडिया सामग्री में महिलाएं संख्यात्मक रूप से दिखाई देती हों। प्रिंट से डिजिटल में बदलाव ने स्वचालित रूप से समानता नहीं बनाई; बल्कि, इसने गति, प्रतिस्पर्धा और एल्गोरिथम गेटकीपिंग के माध्यम से पूर्वाग्रहों को बढ़ाया।

गुणात्मक डेटा से एक महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक अंतर्दृष्टि यह है कि लिंग और भाषा प्रौद्योगिकी और दर्शकों की भागीदारी के साथ गतिशील रूप से बातचीत करते हैं। डिजिटल पत्रकारिता की सहभागी प्रकृति—टिप्पणी थ्रेड्स, रीट्वीट, हैशटैग—भाषाई उत्पादन को न्यूज़रूम से परे तक ले जाती है। दर्शकों की प्रतिक्रियाएं समर्थन और शत्रुता दोनों के माध्यम से लैंगिक विमर्श को मज़बूत करती हैं। महिला पत्रकारों ने बताया कि ऑनलाइन उत्पीड़न, हालांकि बहुत हानिकारक है, अनजाने में महिलाओं की डिजिटल दृश्यता के बारे में पितृसत्तात्मक चिंता को उजागर करता है। साथ ही, #MeTooIndia से लेकर #SmashThePatriarchy तक सामूहिक नारीवादी डिजिटल आंदोलन, यह दिखाते हैं कि कैसे प्रति-विमर्श प्रतिरोध के लिए उन्हीं प्लेटफार्मों का उपयोग कर सकते हैं।

चर्चा आगे प्रतिनिधित्व की चार परस्पर जुड़ी प्रणालियों की पहचान करती है: भाषाई, दृश्य, संस्थागत और एल्गोरिथम। भाषाई प्रणाली यह नियंत्रित करती है कि कहानियाँ कैसे लिखी जाती हैं; दृश्य प्रणाली यह निर्धारित करती है कि विषय कैसे दिखाई देते हैं; संस्थागत प्रणाली यह तय करती है कि कौन लिखता है और संपादित करता है; और एल्गोरिथम प्रणाली यह तय करती है कि क्या प्रसारित होता है। लैंगिक पूर्वाग्रह बना रहता है क्योंकि ये प्रणालियाँ पुनरावर्ती रूप से बातचीत करती हैं। उदाहरण के लिए, महिला संपादकों का संस्थागत अल्प-प्रतिनिधित्व भाषाई एकरूपता की ओर ले जाता है; पुरुष नज़र से आकार दिया गया दृश्य फ्रेम भावनात्मक रूप से आवेशित छवियों के लिए एल्गोरिथम वरीयता के साथ संरेखित होता है; फिर यह चक्र दर्शकों की प्रतिक्रिया मेट्रिक्स के माध्यम से खुद को मज़बूत करता है। इस लूप की जटिलता के लिए सभी प्रणालियों में एक साथ अंतर-क्षेत्रीय सुधार की आवश्यकता है।

एक और महत्वपूर्ण चर्चा का बिंदु डिजिटल लैंगिक विमर्श का अंतर्राष्ट्रीय आयाम है। द डेली स्टार (बांग्लादेश) और बीबीसी हिंदी के तुलनात्मक डेटा से पता चलता है कि अंग्रेजी-भाषा के आउटलेट लहजे में थोड़ा अधिक लैंगिक-संतुलित हैं, जबकि स्थानीय भाषा के आउटलेट नारीवादी सामग्री के लिए दर्शकों की अधिक प्रतिक्रिया का सामना करते हैं। यह पैटर्न लैंगिक समानता के प्रति सामाजिक-सांस्कृतिक रवैये को दिखाता है, न कि भाषाई अक्षमता को। फिर भी, डिजिटल पत्रकारिता स्थानीय नारीवादी अभिव्यक्ति के लिए जगह देती है—जहां महिलाएं अपनी भाषाई मुहावरों में विरोध व्यक्त करती हैं। खबर लहरिया जैसे प्लेटफॉर्म, जो महिलाओं द्वारा चलाया जाने वाला एक ग्रामीण डिजिटल न्यूज़ रूम है, यह दिखाते हैं कि भाषाई विविधता नारीवादी मीडिया एक्टिविज़्म का एक रूप कैसे बन सकती है।

निष्कर्ष डिजिटल स्पेस में महिला पत्रकारों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक मेहनत को भी रेखांकित करते हैं। पेशेवर कर्तव्यों से परे, वे मॉडरेशन में ऊर्जा लगाती हैं।

© 2025 Author(s). Open Access under CC BY 4.0 License.